प्रथम गणराज को सुमिरू | by Anil Jadhav

जो रिद्धि सिद्धि दाता है
जो रिद्धि सिद्धि दाता है
प्रथम गणराज को सिमरु
जो रिद्धि सिद्धि दाता है

मेरी अरदास सुन देवा तो मूषक चढ़के आ जाना
सभा के मध्य आकर के हमारी लाज रख जाना
करू विनती मैं झुक उनकी, माँ गौरी जिनकी माता है

क्रिया ना मन्त्र मैं जानू शरण मैं तेरी आया हूँ
मेरी बिगड़ी बना देना चढाने कुछ ना लाया हूँ
करू कर जोड़ नम नम के जो मुक्ति के प्रदाता हैं

सुनो शंकर सुमन मुझको अबुद्धि ज्ञान दें जाओ
अँधेरे में भटकते को धर्म की राह दिखलाओ
अनिल विनती करे उनकी विनायक जो कहाता है

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%aa%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a4%a5%e0%a4%ae-%e0%a4%97%e0%a4%a3%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%9c-%e0%a4%95%e0%a5%8b-%e0%a4%b8%e0%a5%81%e0%a4%ae%e0%a4%bf%e0%a4%b0%e0%a5%82-by-anil-jadhav/